


---

Gosthasukta

——  
गोष्ठसूक्त

——  
Document Information



---

Text title : goShThasUkta atharvAveda 3.14

File name : goShThasUkta.itx

Category : sUkta, veda, svara

Location : doc\_veda

Transliterated by : Ankur Nagpal, Sira Athale

Proofread by : Ankur Nagpal, Sira Athale

Description-comments : atharvaveda tRitIya kANDam | sUktaM 14

Latest update : February 14, 2025

Send corrections to : sanskrit at cheerful dot c om

---

This text is prepared by volunteers and is to be used for personal study and research. The file is not to be copied or reposted without permission, for promotion of any website or individuals or for commercial purpose.

**Please help to maintain respect for volunteer spirit.**

---


Please note that proofreading is done using Devanagari version and other language/scripts are generated using **sanscript**.

---

February 14, 2025

*sanskritdocuments.org*

---



गोष्ठसूक्त



अथर्ववेदस्य तृतीयकाण्डम् । सूक्तं १४ ।  
ऋषिः - ब्रह्मा, देवता - गावो (गोष्ठः), अर्यमादयो मन्त्रोक्ताः,  
छन्दः १-५ अनुष्टुप्, ६ आर्षीत्रिष्टुप् ।  
गोरक्षोपदेशः - गोरक्षा का उपदेश

सस्वर

सं वो गोष्ठेन सुषदा सं रय्या सं सुभूत्या ।  
अहर्जातस्य यन्नाम तेना वः सं सृजामसि ॥ १॥  
सं वः सृजत्वर्यमा सं पूषा सं बृहस्पतिः ।  
समिन्द्रो यो धनञ्जयो मयि पुष्यत यद्वसु ॥ २॥  
संजग्माना अबिभ्युषीरस्मिन्नोष्ठे करीषिणीः ।  
बिभ्रतीः सोम्यं मध्वनमीवा उपेतन ॥ ३॥  
इहैव गाव एतनेहो शकेव पुष्यत ।  
इहैवोत प्र जायध्वं मयि संज्ञानमस्तु वः ॥ ४॥  
शिवो वो गोष्ठो भवतु शारिशाकेव पुष्यत ।  
इहैवोत प्र जायध्वं मया वः सं सृजामसि ॥ ५॥  
मया गावो गोपतिना सचध्वमयं वो गोष्ठ इह पोषयिष्णुः ।  
रायस्पोषेण बहुला भवन्तीर्जीवा जीवन्तीरुप वः सदेम ॥ ६॥

निःस्वर

सं वो गोष्ठेन सुषदा सं रय्या सं सुभूत्या ।

अहर्जातस्य यन्नाम तेना वः सं सृजामसि ॥ १॥

सं वः सृजत्वर्थमा सं पूषा सं बृहस्पतिः ।  
समिन्द्रो यो धनञ्जयो मयि पुष्यत यद्वसु ॥ २॥

संजग्माना अबिभ्युषीरस्मिन्नोष्ठे करीषिणीः ।  
बिभ्रतीः सोम्यं मध्वनमीवा उपेतन ॥ ३॥

इहैव गाव एतनेहो शकेव पुष्यत ।  
इहैवोत प्र जायध्वं मयि संज्ञानमस्तु वः ॥ ४॥

शिवो वो गोष्ठो भवतु शारिशाकेव पुष्यत ।  
इहैवोत प्र जायध्वं मया वः सं सृजामसि ॥ ५॥

मया गावो गोपतिना सचध्वमयं वो गोष्ठ इह पोषयिष्णुः ।  
रायस्पोषेण बहुला भवन्तीर्जीवा जीवन्तीरुप वः सदेम ॥ ६॥

Encoded and proofread by Ankur Nagpal, Sira Athale

---

—  
*Gosthasukta*

pdf was typeset on February 14, 2025

—  
Please send corrections to [sanskrit@cheerful.com](mailto:sanskrit@cheerful.com)

